कर्मविपाक कर्मग्रंथ सह पद्यानुवाद

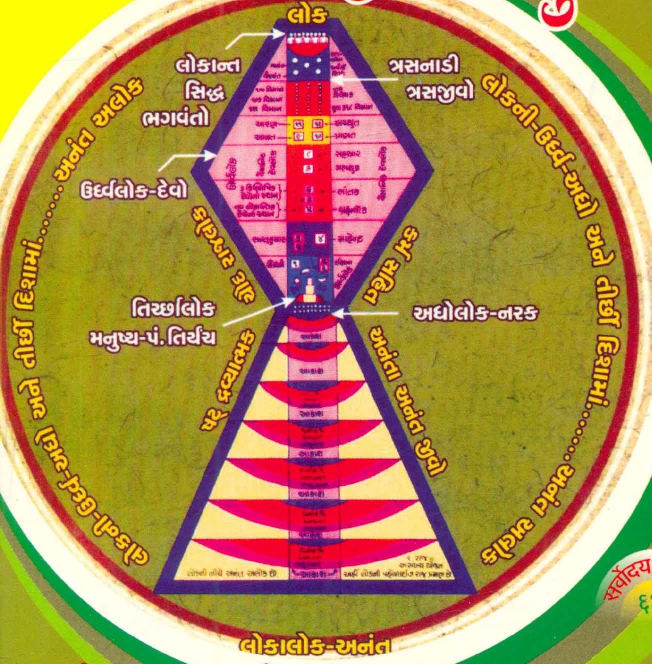

सर्वोदय ग्रंथावली ६४५

संयोजक - प.पू. श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टनी विविध प्रवृतिओनी झलक

- श्री गृहमंदिरनी योजना
- श्री जिन प्रतिमाजीनी अष्ट मंगल पाटली योजना
- श्री गुरुमूर्तिओनुं निर्माण
- श्री ताम्रयंत्रोनी संकलना
- श्री आगम साहित्य
- श्री अर्वाचीन साहित्य
- श्री प्राचीन साहित्यनुं पांच-छ भाषामां संकलन
- श्री मल्टीकलर साहित्य
- पू. आ. श्री गुणसागरसूरि ज्ञानसंस्कार शिबिरनुं आयोजन
- गुरुगुण गीत गंगा केसेटोनुं आयोजन

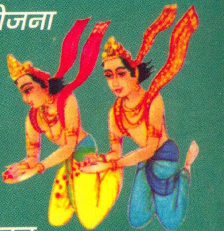

पुस्तक प्राप्ति स्थान

विराग-तेजस-ऋजु गंगर
रमेश अपार्टमेन्ट, अहिल्या बाग सामे, थाणा

श्री सोमचंद भाणजी लालका
मुंबई गली, पो.-अमलनेर,
जि.-जलगाम, महाराष्ट्र-४२५४०१

मनोज जैन
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर, ३८२००७

सर्वोदय ग्रंथावली - ६४५

[illegible] स्वाध्याय - [illegible]श्रेणी - ४५

श्री देवेंद्रसूरिकृत
कर्मविपाक कर्मग्रंथ मूळ साथे गुर्जर पद्यानुवाद

पद्यानुवादक

पूज्य श्रुतोपासक मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

प्रकाशक

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट

सौजन्य :- श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ ज्ञानखाता - सेंधवा (म.प्र.)

वीर सं. २५३५, वि. सं. २०६५, आर्य संवत ८२९, गुणसंवत - २१

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

।।श्री महावीराय नमः।।।। श्री सर्वोदय पार्श्वनाथाय नमः।।।। श्री गौतमस्वामिने नमः।।

अचलगच्छेश जंगमयुगप्रधान आ. श्री आर्यरक्षित जयसिंह महेन्द्रप्रभ मेरुतुंग धर्ममूर्ति कल्याण गौतम - गुणसागरसूरिभ्यो नमः।।

दिव्य कृपा

कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छेश प.पू. आ.भ.श्री गौतम - नीति - गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शुभ आशीर्वाद

अचलगच्छाधिपति प.पू. आ.भ.श्री गुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा.

प.पू. युवाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पू. गणिवर्यो, पू. मुनिवर्यो आदि

प्रेरणादाता

प.पू. तपस्वी मुनिराज श्री चारित्ररत्नसागरजी म.सा.

शुभेच्छुक

प.पू. मुनि श्री जगवल्लभ-गुणवल्लभसागरजी म.सा. आदि ठाणा - ५०

मार्गदर्शक

प.पू. मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म.सा.

संपादक

मनोज आर. जैन - कोबा

मूल्य २५ रु. ।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।। वि. सं. २०६५, प्रथमावृत्ति

प्रथम कर्मग्रंथ प्रास्ताविकम्

जैनदर्शन जगतना तमाम दर्शनो करता अनेक रीते चढीयातुं छे ते पैकी जैनधर्मनुं कर्मविज्ञान एक छे. वैदिकादि घणाखरा धर्मदर्शनोमां कर्म विशे थोडा-घणा अंशे प्रतिपादन मळे छे पण सांगोपांग मार्गदर्शन जैनधर्म सिवाय कोई पासे नथी. कारण स्पष्ट छे तेना प्रणेता सर्वदर्शी सर्वज्ञ एवा तीर्थंकर भगवंतो. जीव अनादिकाळथी कर्मथी क्षीरनीरवत् लेपायेलो छे तेने परिशुद्ध करवानी प्रक्रिया कर्मविज्ञानमां उपदेशाई छे.

दरेक जीवात्मा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने मन-वचन-कायाना योगो द्वारा सतत कर्मोपार्जन करतो रहे छे. उपार्जित कर्मो आत्मा साथे एकमेकभावे चोटी रहे छे. तेने दूर करवा माटेनी हेय-ज्ञेय-उपादेय प्रक्रियाने समजवा माटे केवली प्ररुपित कर्मसिद्धान्त आत्मसात् करवो अति आवश्यक बने छे.

वीतरागना एकान्तहितकारी वचनानुसार जीव तप-जप-आचरण नथी करतो त्यां सुधी ते चतुर्गतिरूप भवभ्रमणथी नथी अटकतो. ज्ञानीओनी दृष्टिए दयनीय दशाने पामेलो ते जीव अनेक प्रकारनी यातनाओ-दुःखो भोगवे छे. कर्मनी अने आत्माना

शुद्ध स्वरूपनी ओळख करावचा पूर्वाचार्योए अपूर्वकोटिना अनेक ग्रंथरत्नोनुं सर्जन करेल छे. ते पैकी आचार्य श्री देवेन्द्रसूरिजीए रचेल कर्मविपाक, कर्मस्तव, बंधस्वामित्व, षडशीति, अने शतक नामक पांच नव्य कर्मग्रंथोमां अने पूर्वाचार्य कृत सप्ततिका नामक छट्ठा कर्मग्रंथमां कर्मोनुं सुंदर विज्ञान प्रस्तुत करीने मुमुक्षुओने अतीव रोचक मार्गदर्शन पूरुं पाड्युं छे.

आ पुस्तिकामां कर्मविपाक - प्रथम कर्मग्रंथ छापवामां आव्यो छे. तेमां कर्मोनुं स्वरूप, कर्मबंधना चार प्रकार, कर्मनी मूळ आठ प्रकृतिओ अने तेनी १५८ उत्तरप्रकृतिओना नामो, तेनुं स्वरूप, बंध उदय उदीरणा अने सत्तानुं स्वरूप तेमज कर्मबंधना हेतुओ इत्यादि विषयो रसप्रद रीते दर्शाव्या छे. आत्मार्थी भव्यजीवोने ते जाणवा खूब ज जरूरी छे.

पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा. ता. २१-१२-०५ थी ता. २३-०४-०६ सुधी श्री वीरचंद सोनी परिवारना तलासरीना N. N. सन्स पेट्रोलपंपना निवास स्थाने रह्या हता. पूज्यश्री साथे पूज्य मुनिराज श्री गुणवल्लभसागरजी म.सा. हता. चार महिनानी स्थिरता दरम्यान पूज्य गुणवल्लभसागरजीए १५०० गाथाओ कंठस्थ करी हती ज्यारे पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिराज

श्री सर्वोदयसागरजीए २० नूतन रचनाओ करी हती तेमांथी त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथनी मळी नव रचनाओ आ प्रकाशन श्रेणीमां आपवामां आवी छे. प्रस्तुत पुस्तिकामां अमे पूज्य मुनिश्री द्वारा रचित गुर्जरभाषाबद्ध प्रथमकर्मग्रंथनो पद्यानुवाद प्रारंभमां आप्यो छे अने पछी प्रथम कर्मग्रंथ मूळ आपेल छे जेथी वाचक-मुमुक्षुओ गाथाओनो स्वाध्याय अने अर्थनी अवधारणा बन्ने साथे करी शकशे. वधु ऊंडाणपूर्वक अभ्यास करवा मांगता जिज्ञासुओ माटे आ पुस्तिकाना प्रान्ते प्रथमकर्मग्रंथने लगता प्राप्तसाहित्यनी टीप आपवामां आवेल छे.

परम पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिप्रवर श्री सर्वोदयसागरजी महाराजश्रीना सत्प्रयास अने प्रेरणाथी आ रीते जीवविचार आदि चार प्रकरणो, त्रणभाष्यो अने छ कर्मग्रंथोनो मूळ साथे पद्यानुवाद सर्वप्रथमवार छपाई रह्यो छे. अने ते ज्ञानपिपासुओ माटे आशीर्वाद रूप सिद्ध थशे. पूज्य मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ए आ कार्यमां सुंदर मार्गदर्शन करेल छे. आ पद्यानुवादने अक्षरशः निरीक्षण करी आपवा बदल पं. श्री चन्द्रकान्तभाई एस. संघवी-पाटणनो तेमज दरेक प्रकरणोना साहित्यनी नोंध आपवा बदल आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा तथा पं. जितेन्द्र

बी. शाहनो (एल.डी. इन्डोलोजी-अमदावाद) अन्तःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करीए छीए.

प्रकाशन संस्था श्री चारित्ररत्नफा.चे.ट्रस्टे प्रभु महावीरना २५३५मा निर्वाण महोत्सवना उपलक्षमां २५३५ ग्रंथो प्रकाशित करवानो महान संकल्प कर्यो छे. ए संदर्भमां ५०० जेटला ग्रंथो प्रकाशित थई चूक्या छे. तेनो अमने खूबज हर्ष छे. जेमां ५०० पूजन प्रतो पैकी २०० प्रतो प्रकाशित थई गई छे, ५०० अप्रगट ग्रंथो पैकी ५० ग्रंथो प्रेसमां छे, १३५ कथा ग्रंथो छ भाषामा अने ५ भाषामां प्रकाशित थया छे जे साधु-साध्वीजीओने भणवा माटे खूबज उपयोगी छे, ४५ आगम सचित्र गुजराती, हिंदी अने अंग्रेजी भावार्थ साथे प्रकाशित थयेल छे, ३०० रास वि. मर्यादित नकलो प्रकाशित करी छे, अचलगच्छनी १०० पूजाओ पैकी ५० प्रकाशित करी छे, १०० ढालिया, १५० अचलगच्छीय आर्चार्योना संस्कृत चरित्रो, १०८ करमशी खेतशी खोनानुं अप्रगट साहित्य, १५० श्री पार्श्वभाईनुं अप्रगट साहित्य, ५१ गुणमंजूषा प्रकाशित थयेल छे. ५१ स्तोत्रो खंडान्वय-दंडान्वय अने पदच्छेद युक्त प्रकाशन थई रह्या छे जेमां २१ स्तोत्रो प्रेसमां छे. तदुपरांत १२० सामायिकमां स्वाध्याय पुस्तिकाओ, २२५ विविध ग्रंथो आम कुल

મળીને ૨૫૩૫ ગ્રંથો થાય છે. હમણાસુધી આ કાર્ય ધીમી ગતિએ ચાલતું હતું તે હવે દેવ-ગુરુ પસાયે વેગવંતુ ચાલશે એવી આશા છે.

ટ્રસ્ટના નિર્ણયો

૧. હવે પછી બધા ગ્રંથો મલ્ટી કલરમાં છપાશે.

૨. ગ્રંથો માટે દાનની અપીલ બહાર પડશે નહિ.

૩. અધ્યયનમાં ઉપયોગી માહિતી અલભ્ય બને તો પોસ્ટલ ખર્ચ તથા ઝેરોક્ષ ખર્ચ લઈને વ્યવસ્થા કરી આપવી.

૪. પ્રકાશિત ગ્રંથો કોઈને પણ ભેટમાં આપવા નહિ.

૫. વિ.સં ૨૦૬૭ પછી યોગ્ય સમયે ટ્રસ્ટનું વિસર્જન કરી દેવાશે.

અન્તે વાચક વર્ગને નમ્ર વિનંતિ કરીએ છીએ કે પ્રમાદવશ આ પ્રકાશનમાં કોઈ પ્રકારે ત્રુટીઓ રહી ગઈ હોય તો સૂચિત કરશો જેથી પુનરાવૃત્તિમાં સુધારો વધારો કરી શકીશું.

- લિ. શ્રી ચારિત્રરત્ન ફા. ચે. ટ્રસ્ટવતી

શ્રી સોમચંદ ભાણજી લાલકા

શ્રી જેન્તીલાલ જેઠાભાઈ મૈશેરીના

સાદર જયજિનેંદ્ર

कर्मविपाक कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं,
देवेन्द्रसूरि रचित कर्मविपाक गुर्जर पद्ये रचुं
जीव वडे हेतुथी जे कराय तेने कर्म कहेवाय छे
विपाकनो अर्थ अनुभव करवो एम कराय छे १

कर्मना चार भेद

कर्म प्रकृति स्थिति रस अने प्रदेश चार प्रकार छे
लाडवाना प्रकारे जाणो ते वात-पित्त-कफ हरे छे
जे मूल प्रकृति कर्मनी शास्त्रकारे आठ बतावी छे
उत्तर प्रकृतिओ एकसो अट्ठावन भेदे जणावी छे २

आठ कर्मना नाम - भेद कहे छे

ज्ञान अने दर्शना वरणीय वेदनीय मोहराय छे
आयुष्य नाम गोत्र अंतराय आठ भेदे कर्मो थाय छे
पांच नव बे अट्ठावीस अने चार एकसो त्रण भेद छे
गोत्रना बे अंतराय पांच कुल एकसो अट्ठावन छे ३

ज्ञानना भेद - मतिज्ञान

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय केवलज्ञान पांच भेद छे
स्पर्श रस घ्राण श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह मतिज्ञान छे
मन अने चक्षुरिन्द्रियने अप्राप्यकारी गणावाया छे
मतिज्ञानने आगममां आभिनिबोधिक जणावाया छे ४

मतिज्ञान - श्रुतज्ञानना भेद

अर्थावग्रह ईहा अपाय धारणा ६ भेदे मतिज्ञान छे
छ ने गुणतां चोवीश भेद कुल अठ्यावीश जणाय छे
मतिज्ञानना बत्रीश भेद कुल (अठ्यावीश)
त्रणसो चालीश लखाय छे
श्रुतज्ञानना चौद भेदो अथवा वीस भेदो थाय छे ५

श्रुतज्ञानना भेद

अक्षर सन्नी सम्यक् सादिने सपर्यवसित श्रुत छे
गमिक अंगप्रविष्ट थयां प्रतिपक्षे चौद भेद थाय छे
हंस आदि अढार लिपि संज्ञाक्षर आदि त्रण भेद छे
अंगप्रविष्ट ने अंगबाह्यने श्रुतज्ञान कहेवाय छे ६

श्रुतज्ञानना भेद

बीजा श्रुतज्ञानना वीस भेदो अनुक्रमे गणावाय छे
पर्याय अक्षर पद संघात प्रतिपत्ति पांच थाय छे
अनुयोग प्राभृत प्राभृत वस्तु पूर्व गवाय छे
समास सहित दरेक गणतां वीस भेदो जणाय छे ७

अवधि - मनःपर्यव - केवल ज्ञान भेद

हवे अवधिज्ञानना छ भेदो अनुगामी वर्धमान छे
प्रतिपाति त्रणने विरुद्ध गणता छ भेदे प्रकाशमान छे
भव-गुण प्रत्ययिकने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव मान छे
ऋजु-विपुलमति चोथा भेदे एक ज केवलज्ञान छे ८

ज्ञान दर्शन विवरण

पांचे ज्ञाननुं आवरण जाणो आंखे बांधेल पडल छे
द्वारपाल जेवुं दर्शनावरणीय नव भेदे ए अटल छे
चक्षु अचक्षु अवधिदर्शन केवलदर्शन चार छे
सामान्य बोधवाळा होवाथी तेथी ते कर्मोना सार छे ९-१०

दर्शनावरण - निद्राना प्रकार

सुखेथी जगाडी शकाय ते निद्रानो प्रकार गणाय छे

बहु कष्टे जागी शकाय तेने निद्रा निद्रा जणावाय छे
उभां अने बेठा उंघे तेने प्रचला नामे ओळखाय छे
चालतां चालतां उंघे तेने प्रचला प्रचला कहेवाय छे ११

दर्शन - वेदनीय कर्म विपाक

दिवसे चिंतवेलुं कार्य रात्रे निद्राना काळमां करे छे
थिणद्धि निद्राने जाणजो बळदेवना बळवाळी छे
आ बळ प्रथम संघयणे वर्तमाने आठ गणुं बळ छे
मधु लिपी असि धार चारो ए वेदनीय बे प्रकारे छे १२

वेदनीय - मोहनीय

बहुलताए मनुष्य देवने शाता वेदनीय होय छे
नारकी तिर्यंचो अशाता वेदनीयथी पीडाय छे
मोहनीय कर्म मदिरा जेवुं ए भान भुलावे दरेकने
दर्शन-चारित्र-मोहनीय ए मुख्य भेद जुओ बे पणे १३

दर्शन मोहनीय भेद

दर्शन मोहनीय प्रकारो सम्यक्त्व मिश्र मिथ्यात्व छे
शुद्ध दलिकवाळुं सम्यक्त्व मोहनीय कहेवाय छे
अर्ध शुद्ध दलिक वेदनवाळु मिश्र मोहनीय होय छे

अशुद्ध दलिक वेदनवाळु मिथ्यात्व मोहने जोवाय छे १४
जीव अजीवने पुण्य पाप आश्रव संवर निर्जरा
बंध मोक्ष ए नव तत्त्वोनी भावे करे छे सद्दहणा
क्षायिकादि घणा भेदोवाळुं तेहने सम्यक्त्व होय छे
क्षयोपशमने उपशम सास्वादन वेदक जोय छे १५
मिश्र मोहनीय उदये एने जिनधर्मे राग-द्वेष न होय
एक अंतरमुहूर्त जाणजो नालिकेर द्वीपे मनुष्यो जोय
मिथ्यात्व मोहनीय उदये विपरीत बुद्धि थाय छे
राग द्वेष मोहादि दोषोथी एने स्त्रीमां स्वर्ग देखाय छे १६

चारित्र मोहनीय भेद

चारित्र मोहनीय बे भेदे कषाय नोकषाय जाणजो
अनंत-अप्रत्या-प्रत्याख्यानीय संज्वलने ते प्रमाणजो
क्रोध मान माया लोभ चार चार भेदे सोळ थाय छे
नव नोकषाय चारित्रना कुल भेद पच्चीश जणाय छे १७

क्रोध

कषायनुं काळ मान कहे अनंतानुबंधि यावज्जीव
अप्रत्याख्यानीय वरस छे एम कहे छे सर्वज्ञ देव

प्रत्याख्यानीय कषायनुं चार मास काळने जाणजो
संज्वलन कषाय पंदर दिवस मनमां ए धारजो १८

मान - माया - लोभ

पाणीनी रेखा रेतीनी रेखा पृथ्वी पर्वतनी छे क्रोधनी
नेतरनी काष्ट हाडकानी सोटी पथ्थरनी छे माननी
लाकडाना छोडा गौमुत्रने मेषना शिंगडा वांसमूळ
माया लोभ हळदर काजळ गाडा मळी कीरमजी कूळ १९-२०

नव नोकषाय

नव नोकषाय मोहनीय हास्य रति अरति शोक छे
भय जुगुप्सा पुरुषवेद स्त्रीवेद नपुंसक नव छे
पुरुषनो अभिलाष स्त्रीवेद विपरीत पुरुषवेद छे
उभय नपुंसकने जाणो लींडा तृण नगर दाह छे २१-२२

आयु - नाम

नरक तिर्यंच मनुष्य देव बेडी सरखुं आयुष्य छे
नामकर्म चित्रकार जेवुं चार प्रकारो कहेवाय छे
बेंतालीस सडसठने त्राणुं एकसो त्रण नाम जाणजो
पिंड प्रत्येक त्रस दशक स्थावर दशक प्रमाणजो २३

नामकर्म

गति जाति शरीर अंगोपांग बंधन संघातन संघयण
संस्थान वर्ण गंध रस स्पर्श आनुपूर्वी विहाय पिंड जाण
पराघात उच्छ्वास आतप उद्योत अगुरुलघु छे
जिननाम निर्माण उपघात प्रत्येकना आठ भेद छे २४-२५
त्रस बादर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर सुभग शुभ सुस्वर
आदेय नाम त्रशदशक छे स्थावर सूक्ष्म अपर्याप्त
साधारण अस्थिर अशुभ दुर्भग दुस्वर अनादेय
अयश नाम स्थावरदशक, बेतालीश भेद गणाय छे २६-२७
त्रस चतुष्क स्थिर षष्ठ अस्थिर षष्ठने सूक्ष्म त्रिक
स्थावर चतुष्क सुभग त्रिक प्ररूपणा छे विभास जिम
चौद पिंड प्रकृतिना भेदो चार पांच पांच त्रण पांच
पांच छ छ पांच बे पांच आठ चार भेद एम जांच २८-२९
पांसठमां अठ्यावीस गणता त्राणुं प्रकृति सत्तामां जाणो
बंधनना पांचने बदले एकसो त्रण माटे पंदर गणो
बंधन संघातन शरीरे वर्णादि चारने गणाय छे
सडसठ भेद नाम कर्मना, कर्मग्रन्थमां जणाय छे ३०-३२

नरक तिर्यंच मनुष्य देव ए चार गति गणाय छे
एकेन्द्रियथी पंचेन्द्रियने पांच जातिमां जणाय छे
औदारिक वैक्रिय शरीर आहारक तैजस शरीर छे
कार्मणने पांचमुं गणता पांच शरीर बतावाय छे ३३
बे भुजा पीठ मस्तक छाती बे साथळ पेट आठ अंग छे
उपांगमां आंगळीने जाणो वेढा रेखा अंगोपांग छे
बंधायेलाने बंधाता कर्मो औदारिक पुद्‌गलो जाणजो
लाखनी जेम चोटता ए कर्मोने तोडवा विचारजो ३४
जे औदारिक शरीर पुद्‌गल पिंडभूत संघात रूप छे
संघातन नामकर्म जाणो चारे शरीरो भरपुर छे
औदारिक अने वैक्रिय आहारकने तैजस जोडता
कार्मण नव त्रण त्रण जाणो पंदर बंधनने तोडता ३५-३७
हाडकानी रचनाने जाणो जे वज्र ऋषभ नाराच छे
ऋषभ नाराच अने नाराच अर्ध नाराच ए चोथुं छे
कीलिका छेवट्‌ठु संघयण ऋषभनो अर्थ पाटो छे
कीलिका-खीलो-नाराच मर्कट जेनो मां साथे नातो छे ३८-३९
समचतुरस्त्र न्यग्रोध सादि कुब्ज वामन हुंडक जाणो

पांच वर्णोमां कृष्ण नील लाल पीत श्वेतने वखाणो
सुरभि दुरभि बे गंध जाणो मधुरादि पांच रसो छे
गुरु लघु मृदुने खर, शीत-उष्णादि आठ स्पर्शो छे ४०-४१
नील कृष्ण दुर्गंध तिक्त कटु गुरु कर्कश रूक्ष
शीतादि नव अशुभ जाणो अग्यार शास्त्रे शुभ छे दक्ष
गति आनुपूर्वी चार जाणो द्विक-त्रिक आयु साथे गणो
शुभ अशुभ विहायोगति आनुपूर्वी गति तेवी जाणो ४२-४३

नामकर्म

पराघात उदयथी क्षोभ थाय श्वासोश्वास नामे श्वास लेवाय
आतपे तडको उष्ण उदये उद्योत नामकर्म जोवाय
ज्योतिषिओ खजवाने तारा एमने उदयमां आवे छे
अगुरुलघु हलको न भारे तीर्थंकर सर्वत्र पूजाय छे ४४-४७
अंगोपांग रचना निर्माण जाणो उपघाते दुखी थाय छे
हालता चालता त्रस जीवो स्थिर तो बादर जणाय छे
पर्याप्तिओ जे पूर्ण करे ते पर्याप्ता कहेवाय छे
नामकर्मना भेदोनुं अहीं सुंदर वर्णन कराय छे
एक शरीरे एक जीवने प्रत्येक नाम कहेवाय छे

स्थिर नामे हाडकाने जाणो मस्तक उन्नत रखाय छे
नाभिथी उपरना भागने शुभ नामकर्म उदय जाणो
सर्व जनोने प्रिय थाय ते ए सुभग नाम अनुमानो
मधुर स्वर सुस्वर जाणो आदेय सर्वने ग्राह्य होय
यशनामथी कीर्ति व्यापे स्थावर दशक भिन्न जोय ४८-५१

गोत्र कर्म

गोत्र कर्म कुंभार जेवुं छे उच्च नीच बे भेद जणाय छे
दान लाभ भोग उपभोग वीर्यान्तराय पांच गणाय छे ५२

अंतराय कर्म, आठ कर्मबंधना कारण

लक्ष्मीना भंडारी जेवुं अंतराय कर्म जणाय छे ५३
प्रत्यनीक निह्नवपणुं ज्ञान ज्ञानी नाश कराय छे
ज्ञानावरणीय कर्म बांधे दर्शन दर्शनावरणी जाणो
दर्शननी अत्यंत आशातना न भक्त पान वसति गणो ५४
गुरु भक्ति क्षमा करुणाने व्रत योग कषायविजय छे
दृढ धर्मीपणुं सरलताथी शाता वेदनीय बंधाय छे
विपरीतथी अशाता थाय उन्मार्ग देशना मार्गे नाश
देवद्रव्यहरण चैत्यनाश मोहनीय कर्मनो मळे त्रास ५५-५६

कषाय हास्यादि विषयोमां आसक्त चारित्र मोहनीय छे
महा आरंभ महा परिग्रह रौद्र ध्याने नरकायु जणाय छे
शठ शल्य गुढ हृदयथी तिर्यंचायु बंध कराय छे
अल्प कषायी दान रूचि मध्यम गुणो मनुष्ये जाय छे ५७-५८
अविरत बाल तपस्वी अकाम निर्जरा देवायु छे
सरलने गारवरहित शुभ नाम बाकी अशुभ छे
गुणग्राहीने मद रहित भणवा के भणावामां छे
जिन भक्त उच्च गोत्रे छे विपरीतथी नीच गोत्र छे ५९-६०
जिन पूजामां विघ्नकारी अढारे पापोमां आसक्त छे
अंतराय कर्मनें बांधे एम देवेन्द्रसूरि कहे छे ६१

उपसंहार

मतिचंद्रने नरवाहन लखी आधार लई रचना करी
तलासरीमां मल्लिनाथना मुनि सर्वोदये गुण लही

इति कर्मविपाक कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद संपूर्ण

कर्मविपाक कर्मग्रंथ मूल

सिरिवीरजिणं वंदिअ, कम्मविवागं समासओ तुच्छं;
कीरइ जिएण हेउहिं, जेणं तो भन्नए कम्मं. १

पयइ ठिइ रस पएसा, तं चउहा मोअगस्स दिट्ठंता;
मूलपगइट्ठ उत्तर-पगइ अडवन्नसयभेयं. २

इह नाणदंसणावरण-वेअमोहाउ-नामगोआणि;
विग्घं च पणनवदु-अट्ठवीस चउतिसयदुपणविहं. ३

मइसुअओही मण केवलाणि, नाणाणि तत्थ मइनाणं;
वंजणवग्गह चउहा, मणनयणविणिंदियचउक्का. ४

अत्थुग्गह-ईहावाय-धारणा करणमाणसेहिं छहा,
इय अट्ठवीसभेअं, चउदसहा वीसहा व सुयं. ५

अक्खर सन्नी सम्मं, साइअं खलु सपज्जवसिअं च;
गमियं अंगपविट्ठं, सत्त वि एए सपडिवक्खा. ६

पज्जयअक्खर-पयसंघाया, पडिवत्ति तह य अणुओगो;
पाहुड पाहुडपाहुड, वत्थु पुव्वा य ससमासा. ७

अणुगामि वड्ढमाणय, पडिवाइयरविहा छहा ओही;
रिउमई-विउलमई, मणनाणं केवलमिगविहाणं. ८
एसिं जं आवरणं, पडुव्व चक्खुस्स तं तयावरणं;
दंसण चउ पणनिद्दा, वित्तिसमं दंसणावरणं. ९
चक्खूदिट्ठि अचक्खू, सेसिंदिअ ओहिकेवलेहिं च;
दंसणमिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा. १०
सुहपडिबोहा निद्दा, निद्दानिद्दा य दुक्खपडिबोहा;
पयला ठिओवविट्ठस्स, पयलपयला उ चंकमओ. ११
दिणचिंति-अत्थकरणी, थीणद्धी अद्धचक्कि-अद्धबला;
महुलित्तखग्गधारा-लिहणं व दुहा उ वेअणिअं. १२
ओसन्नं सुरमणुए, सायमसायं तु तिरिअ-निरएसु;
मज्जं व मोहणीअं, दुविहं दंसणचरणमोहा. १३
दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तहेव मिच्छत्तं;
सुद्धं अद्धविसुद्धं, अविसुद्धं, तं हवइ कमसो. १४
जिअअजिअपुण्णपावा सवसंवरबंधमुक्खनिज्जरणा;
जेणं सद्दहइ तयं, सम्मं खइगाइबहुभेअं. १५

मीसा न रागदोसो, जिणधम्मे अंतमुहू जहा अन्ने;
नालियरदीव-मणुणो, मिच्छं जिणधम्मविवरीअं. १६
सोलस कसाय नव नोकसाय, दुविहं चरित्तमोहणिअं;
अण अपच्चक्खाणा, अपच्चक्खाणा य संजलणा. १७
जाजीव वरिस चउमास, पक्खगा निरयतिरिअ नर-अमरा;
सम्माणु-सव्वविरइ-अहक्खायचरित्त-घायकरा. १८
जल रेणु पुढवि पव्वय, राइसरिसो चउव्विहो कोहो;
तिणिसलया कट्ठट्ठिअ सेलत्थंभोवमो माणो. १९
मायावलेहि गोमुत्ति, मिंढसिंग घणवंसिमूल समा;
लोहो हलिद्द खंजण, कद्दमकिमिरागसमाणो. २०
जस्सुदया होई जिए, हास रइ अरइ सोग भय कुच्छा;
सनिमित्तमन्नहा वा, तं इह हासाइ मोहणियं. २१
पुरिसित्थितदुभयं पइ, अहिलासो जव्वसा हवइ सो उ;
थी नर नपु वेउदओ, फुंफुम तण नगर दाहसमो. २२
सुरनरतिरिनिरयाऊ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं;
बायाल तिनवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तट्ठी. २३

गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघायणाणि संघयणा;
संठाण वन्नगंधरस-फास अणुपुव्वि विहगगइ. २४
पिंडपयडित्ति चउदस, परघा ऊसास आयवुज्जोअं;
अगुरुलहु तित्थ निमिणो-वघायमिअ अट्ठपत्तेआ. २५
तस बायर पज्जत्तं, पत्तेय थिरं सुभं च सुभगं च;
सुसराइज्जजसं, तसदसगं थावरदसं तु इमं. २६
थावर सुहुम अपज्जं, साहारण अथिर असुभ दुभगाणि;
दुस्सर-णाइज्जा-जस-मिअनामे सेअरा वीसं. २७
तसचउ थिरछक्कं अथिरछक्क, सुहुमतिग थावरचउक्कं;
सुभग-तिगाई विभासा, तयाइं संखाहि पयडीहिं. २८
वन्नचउ अगुरुलहु चउ, तसाइ-दु ति चउर छक्कमिच्चाई;
इअ अन्नावि विभासा, तयाइ संखाहि पयडीहिं. २९
गइआईण उ कमसो, चउपण-पणतिपण-पंचछछक्कं;
पणदुग पणट्ठचउदुग, इअ उत्तरभेय पणसट्ठी. ३०
अडवीसजुआ तिनवइ, संते वा पनरबंधणे तिसयं;
बंधणसंघायगहो, तणूसु सामन्न वण्णचऊ. ३१

इअ सत्तट्ठी बंधोदए य, न य सम्म मीसया बंधे;
बंधुदए सत्ताए, वीस दुवीसट्ठवण्णसयं. ३२
निरयतिरि नरसुरगई, इगबिअतिअचउपणिंदिजाइओ;
ओरालविउव्वाहारग-तेअकम्मण पणसरीरा. ३३
बाहूरु पिट्ठि सिर उर, उयरंग उवंग अंगुलीपमुहा;
सेसा अंगोवंगा, पढमतणुतिगस्सुवंगाणि. ३४
उरलाइ पुग्गलाणं, निबद्ध बज्झंतयाण संबंधं;
जं कुणई जउसमं तं, बंधण मुरलाइतणुनामा. ३५
जं संघायइ उरलाइ-पुग्गले तिणगणंव दंताली·
तं संघायं बंधणमिव, तणुनामेण पंचविहं. ३६
ओरालविउव्वाहारयाण, सग तेअ कम्मजुत्ताणं;
नव बंधणाणि इअर दु-सहियाणं तिन्नि तेसिं च. ३७
संघयणमट्ठिनिचओ, तं छद्धा वज्जरिसहनारायं;
तह रिसहनारायं, नारायं अद्धनारायं. ३८
कीलिअ छेवट्ठं इह, रिसहो पट्टो अ कीलिआ वज्जं;
उभओ मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे. ३९

समचउरंसं निग्गोह, साइ खुज्जाई वामणं हुंडं;
संठाणा वण्णा किण्ह, नील लोहिअ-हलिद्द सिआ. ४०
सुरहिदुरही रसा पण, तित्त कडु कसाय अंबिला महुरा;
फासा गुरुलहु मिउखर, सीउण्ह सिणिद्धरुक्खट्ठा. ४१
नील कसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्खं;
सीअं च असुहनवगं, इक्कारसगं सुभं सेसं. ४२
चउहगइव्व-णुपुव्वी, गइपुव्विदुगं तिगं नियाउजुअं;
पुव्वीउदओ वक्के, सुहअसुहवसुट्टविहगगइ. ४३
परघा उदया पाणी, परेसिं बलिणंपि होइ दुद्धरिसो;
उससण लद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसासनामवसा. ४४
रविबिंबे उ जि अंगं, तावजुअं आयवाउ न उ जलणे;
जमुसिणफासस्स तहिं, लोहिअवण्णस्स उदउत्ति. ४५
अणुसिणपयासरूवं, जिअंगमुज्जोअए इहुज्जोआ;
जइ देवुत्तरविक्किअ, जोइस-खज्जोअमाइव्व. ४६
अंगं न गुरु नं लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया;
तित्थेण तिहुअणस्सवि, पुज्जो से उदओ केवलिणो. ४७

अंगोवंगनिअमणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं;
उवघाया उवहम्मइ, सतणुवयव लंबिगाइहिं. ४८
बितिचउपणिंदिअ तसा, बायरओ बायरा जिआ थूला;
निअनिअपज्जत्तिजुआ, पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं. ४९
पत्तेअतणु पत्ते-उदएणं दंतअट्ठिमाई थिरं;
नाभुवरि सिराइ सुहं, सुभगाओ सव्वजणइट्ठो. ५०
सुसरा महुरसुहझुणी, आइज्जा सव्वलोयगिज्झवओ;
जसओ जसकित्तीओ, थावरदसगं विवज्जत्थं. ५१
गोअं दुहुच्चनीअं, कुलाल इव सुघडभुंभलाइअं;
विग्घं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु वीरिए अ. ५२
सिरिहरिअसमं एअं, जह पडिकुलेण तेण रायाई;
न कुणई दाणाईअं एवं विग्घेण जीवो वि. ५३
पडिणीअत्तण निन्हव, उवघाय पओस अंतराएणं;
अच्चासायणयाए, आवरणदुगं जिओ जयइ. ५४
गुरुभत्ति खंति करुणा-वय जोग कसायविजय दाणजुओ;
दढधम्माई अज्जई, सायमसायं विवज्जसओ. ५५

उमग्गदेसणा मग्ग-नासणा देवदव्वहरणेहिं;
दंसणमोहं जिणमुणि, चेइअ संघाइ पडिणीओ. ५६
दुविहंपि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विवसमणो;
बंधइ निरयाउ महा, रंभपरिग्गह-रओ रुद्दो. ५७
तिरिआउ गूढहिअओ, सढो ससल्लो तहा मणुस्साऊ;
पयइइ तणुकसाओ, दाणरुई मज्झिमगुणो अ. ५८
अविरयमाइ सुराउं, बालतवोऽकामनिज्जरो जयइ;
सरलो अगारविल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं. ५९
गुणपेही मयरहिओ, अज्झयण-ज्झावणारुइ निच्चं;
पकुणइ जिणाइभत्तो, उच्चं नीअं इअरहा उ. ६०
जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं;
इअ कम्मविवागोयं, लिहिओ देविंदसूरीहिं. ६१

इति कर्मविपाक कर्मग्रंथ संपूर्ण

कर्मविपाक संबंधी कृतिओनी सूचि

कृति नाम **कर्ता नाम**

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ ....दवेंद्रसूरि
कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)स्वोपज्ञ सुबोधा टीका .... देवेंद्रसूरि
कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूरि ....अज्ञात जैनश्रमण
कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूर्णि ....गणरत्नसूरि
कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)टिप्पण ....अज्ञात जैनश्रमण
कर्मविपाक नव्य-(गु.)पद्यानुवाद .... दक्षसूरि
कर्मविपाक-(हिं.)अनुवाद .... सखलालजी संघवी
कर्मविपाक-(गु.)विवेचन ....हर्षगुणाश्रीजी
कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)गाथार्थ .. परेशकुमार जसवंतलाल शाह
कर्मविपाक नव्य-(गु.)विवेचन .... वोरशेखरसूरि
कर्मविपाक-(हिं.)विवेचन ....मिश्रीमलजी मधुकर
कर्मविपाक-(गु.)विवेचन ....धोरजलाल डाह्यालाल महेता
कर्मविपाक नव्य-(गु.)विवेचन .... दक्षसूरि
कर्मविपाक-(गु.)विवेचन ....भगवानदास हर्षचंद

कर्मविपाक कर्मग्रंथ संबंधि कृतिओनी सूचि

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन ....नरवाहनसूरि

कर्मविपाक नव्य-(गु.)प्रदीप विवेचन ....प्रभुदास बेचरदास पारेख

कर्मग्रंथ-१-(गु.)प्रश्नोत्तरी विवेचन ....नरवाहनसूरि

कर्मविपाक-(हिं.)विवेचन .... फलचंदजी बोहरा

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध .... शांतिविजय

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध ....जयसोम

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध .... मतिचंद्र

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ ....राजसार-शिष्य

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ ....साधुकीर्ति

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ .... धनविजय

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ ....जोवविजय

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)यंत्र ....समतिवर्द्धन

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन .... रत्नसेनविजय

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ .... शांतिसागर

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन ....जिनयशाश्रीजी

कर्मविपाक नव्य कर्मग्रंथ-(हिं.)विवेचन ...... मनितप्रभसागरजी

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टना प्रकाशनो

- 500 पूजनप्रतो
- 135 6 भाषाना कथाग्रन्थो (अप्राप्य)
- 350 अप्रगट ग्रन्थो हस्तप्रतोमांथी लखाई गया छे
- 45 आगमग्रन्थो (अप्राप्य)
- 120 सामयिकमां स्वाध्याय काव्यकृतिओ (क्रमसर छपाय छे)
- 25 अचलगच्छेश पू. आ. कल्याणसागरसूरि तथा पू. आ. विद्यासागरसूरि रचित स्तोत्र आधारे खंडान्वय-दंडान्वय
- 75 पू. अचलगच्छेश तथा आचार्य भ., साधु भगवंतना संस्कृतमां जीवनचरित्रो

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट तरफथी २५०० ग्रन्थो प्रकाशित करवानी भावना छे. हाल १२५० ग्रन्थोनी झलक आपी छे. लेखक 'श्री पार्श्व' नुं साहित्य क्रमसर प्रकाशित करवानी भावना छे.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

Printed by. Navprabhat 98255 98855

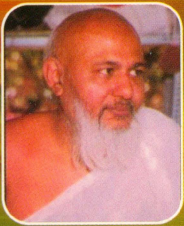

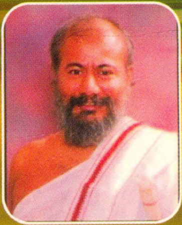

અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ.આ.ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.નો સર્વોદયજીનો પરિવાર

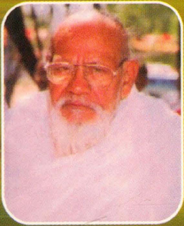

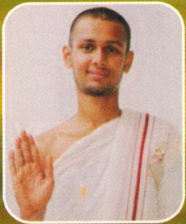

ARYA GRAPHICS - 09925801910